रिड़मल जी राठौड़ की वार्ता कोज –

२५-५-२१ — 200M0039X40 — 1:31:32

दपे खां सगावड़ा –

राव रिड़मल जी राठौड़ खावड़ के खावड़ीया राठौड़ वंसज के थे। रिड़मल जी बहुत ही सपूत एंव विरता के धुर थे। गुजरात के काठीयावाड़ से घोड़े लेकर व्यापारी एक दिन खावड़ में आगये, उन व्यापारीयों का धन्धा घोड़ों के बेचने व खरीददारी का काम था, वो व्यापारी खावड़ में एक प्रजापत के घर घोड़ो का विश्राम कराने के लिए प्रजापत (कुम्हार) के यहाँ घोड़े लेकर रुकने का विचार किया और प्रजापत के वहाँ रुक गये। रात को प्रजापत को व्यापारी बोले कि आपको घोड़ा रोकने के लिए कुछ पैसे देंगे।, उन्ही घोड़ो में से एक कुबी घोड़ी जो ब्यावहने लायक थी वो घोड़ी रात को ब्याव गई और एक घोड़े को जन्म दिया।, शुबह दिन उगते ही व्यापारी आए और अपने घोड़े 15-20 थे। उन घोड़ो को लेकर रवाना होगये –

शुबह प्रजापत उठकर घोड़ी के बाड़े में देखता हैं तो एक छोटा बच्चा अपने उस बाड़े में बैठा है। तब प्रजापत ने सोचा कि वो व्यापारी भुल गए हैं वो वापीस आकर ले जायेंगे। व्यापारी को कोई पता नहीं था वो अपने रास्ते चालते रहे। अब उस प्रजापत को चार-पाँच दिन हो गए उस घोड़े के बच्चे को गाय का दुध मंगवाकर उसको पिलाता है व बैठा हैं। चार-पाँच दिन के बाद उस रिड़मल के खवास, (आगे काम करने वाला था) उनको पता चला कि प्रजापत के घर एक घोड़े का बच्चा हैं। जो बहुत ही नसल दार है। अब उस नाई (सैन) ने कहा कि रिड़मलजी हुकम इस प्रजापत के एक घोड़े का बच्चा है। जो खुब ताकतवर एवं नसलदार है। जो आप चाहो तो अपन ले लेते हैं। तब रिड़मल व खवासजी दोनो उस प्रजापत के घर गए और उस घोड़े को बेचने की बात कही तब प्रजापत ने कहा कि हुकम आप ले जावो। मेरे गरीब आदमी के पास दुध वगैरा है नही

तब रिड़मल ने उस प्रजापत को कहा कि प्रजापत तुम और तुम्हारी पति दोनो हमारे मकान से सोना-जेवरात हिरा-पन्ना जो आप ला सको उतना लाओ और इस घोड़े को मेरे घर छोड़ दो - तब प्रजापत व अपनी औरत ने बोरीयों भरकर सोना-चाँदी जितनी हो उतनी लाये और घोड़ा उस रिड़मल जी के वहाँ छोड़ आये - अब रिड़मल ने उस घोड़े को दुध-काजु-किसमस बदाम, कोपरा, घी सभी ताकतवर चिजें उस घोड़े को खिलाई। तो अब वो घोड़ा नंवलखा (नवलांख) के नाम जानते थे। इस घोड़े की प्रसंशा दोड़ने में यह उपर आकाश में उड़ता था,

एक समय कि बात हैं राव रिड़मल के गाँव खावड़ में वर्षात नही होने के कारण काल-दुकाल पड़ गया यानी घोड़ों के चारे-पानी की व्यवस्था नहीं थी तभी राव रिड़मलजी अमरकोट जो सिन्ध प्रान्त में है उस अमरकोट गये।

अमरकोट गांव सोढो राजपुतों का हल्का है जागीरी सोढो राजपुतो की है। राव रिड़मलजी अमरकोट जाकर उस अमरकोट के हिरण पशु उनको घोड़े से पकड़-2 कर उस हिरणो के गले में गुंगरो की माला बनाकर उस हिरणों के गले में डाल दी' रिड़मल के साथ में बिला-खवास (डाड़ी-करीन करने वाला) था, कमसे-कम 300-400 हिरण घोड़े से पकड़कर उनके गले में माला पहनाकर उस हिरणो को छोड़ देता - एक दिन की बात है 200-300 हिरण एक साथ निकले जंगल में तभी गुंगरों की रणुकार (झणकार) सोढोजी ने सुनी तभी सोढ़जी ने सोचा कि कोई राजा-महाराजा की बरात हाथीयों के व ऊंटो पर जा रही है तभी दासीयों को सोढ़ीजी ने आवाज लगाई की मेरा चीर लेकर ~~आवो~~ आवो में बिना चीर शीश मेरा खुला है राजा-महाराजा मेरा शीश देख लेंगे -

तभी दासीयों ने उस सोढ़ीजी को कहा कि आपको ध्यान नहीं हैं तब सोढ़ीजी ने कहा कि मेरे को कोई ध्यान नहीं है। तब दासीयों ने कहा कि खावड़ गांव का रिड़मलजी राठौड़ जो अपने गांव अमरकोट आये और हिरणों को पकड़-2 कर उनके गले में घुंघरो की माला पहना रखी है। ये हिरणों की टोली है जो घुंघरो का रणकार गुंज रहा है। तब सोढ़ीजी ने अपने कामदारों व परिवार वालों को कह कर दिया कि मैं अगर शादी करूंगी तो उस रिड़मलजी राठौड़ से ही करूंगी तभी परिवार वालो ने उस रिड़मलजी को नारैल जो सगाई-सम्बन्ध के वास्ते ब्राह्मण-जोशीजी को नारेल दे कर भेजा। जोसीजी नारेल लेकर खावड़ देश गए खावड़ में जाकर पूछा तो रिड़मल के बड़े भाई भारमलजी थे उनके दो रानीयों थी।

भारमलजी बड़े भाई थे रिड़मलजी छोटे भाई थे।
रिड़मलजी अपने घोड़े बागों में खेलाने वास्ते गए
जोसीजी पूसते-2 वहाँ आये और कहा कि रिड़मल
को सोढ़ीजी ने नारेल जो सगाई का भेजा है
तब भारमलजी बैठे थे कहा कि रिड़मल मैं हूं
तभी उस ब्राह्मण ने रिड़मल समझकर उस भारमल
को नारेल दिया। अब नारेल देने के बाद भारमल
दुलहा (बिन्द) बनकर बरात गया।
तभी रिड़मलजी बागों से घोड़ा खेलाकर अपने घर
आये और अपनी भाभीजी से पूछा की भाई साहब
कहां गए। तभी रिड़मल की भाभीजी ने कहा कि
आपके भाई साहब शादी करने अमरकोट सोढ़ों के
देश में गए। तभी भाभीजी ने कहा कि अमरकोट
में रिती पाग (पगड़ी) लेने की रिती है।
और अपनी रिड़मलजी बात चली जाएगी

सोढ़ों नारेल मोकलो, जाय रिड़मल नो दयो -
उठे जोसीजी भूल गया, दिजो भारमल हाथ।

सभी भाभीजी ने कहा कि रिड़मलजी आप जाओं नहीं तो आपकी बात चली जाएगी। तब रिड़मलजी को पैसे लेकर रिड़मलजी को रवाना किये।

भाभच ने कहा → आप सोंपाड़े विराजा, भिंजे गढ़री भींत, सोढ़ा हन्चे देश मों पाग

लेवणरी रीत –

तभी रिड़मलजी घोड़ा लेकर ननद का पैसा लेकर अमरकोट की ओर रवाना हो गए।

चलीकहावों नवलखा – बिंजणेसो लेरावो पोड़, पाग ले जासे बिन्दरो नहीं चुको नी ठोड़ –

घोड़े ने कहा → वाग संभावो रावजी जावोज एकी चोट पागज राखों बिन्दरी, कुडो अमरकोट –

अब भारमलजी की बरात अमरकोट के चौवटे रुकी हुई थी। जिसे रिड़मलजी अपने खिले खवास के साथ अमरकोट गये। सोढों ने पहले दो ढोकहा कि आपकी बरात में रिड़मलजी नहीं आये।

① आजम टल्लावो जोनीयों, पूछो मन री बात.
एके रिड़मल बायरो, सोच अलुंणो साथ.

② नव मन केशर गालियो, जगामग-होगई चीर,
भारमल परणीजे, तलावडी, रिड़मल मेहलों बीच.

उन सोढ़ो सिरदारों को पता चला कि यह रिड़मल नहीं है तो उन सोढ़ो राजपूतों ने सुथार को मंगवाकर बुढ़ी दासी जो 110 साल की थी वो दासी भारमल को परणादी, और भारमलजी को रवाना कर दिया.

③ नव गज घोड़ो खाई कुदीयो, कुदो ऊमरकोट
सोढ़ी बिन्द निरखीयों, दे घुंघट री ओट.

अब रिड़मलजी की सोढ़ीजी के साथ शादी कर दी सोढ़ो सिरदारों के मन में घोड़ा नवलखा उनसे लेने कि मन में लगी थी एक दिन साला-बहनोई आपस में दारू (शराब) की मनवार करने लगे-करते-2 रिड़मल के पास पैसे रुपये कम पड़ गये ।

तब रिड़मलजी ने अपना घोड़ा नवलखा दारु की मनवार में अपने को दे दिया। रात को घोड़ा दारु में दिया और शुबह आपने अपने खवासबिल्ले को कहा कि घोड़ा तैयार करो। और अपन आवड़ जायेंगे तब खवास ने कहा कि सोढ़ा सिरदार अपने आप देवेंगे। तब रिड़मल ने कहा कि घोड़ा नहीं देंगे तब सोढ़ीजी वहीं पर रही और घोड़ा प्रोलो के उपर होकर कूद गया फिर बाद में सोढ़ीजी अपने पिवर वालों को कहकर अपना रथ हाककर आवड़ की ओर रवाना होगई।

आवड़ में रिड़मलजी सोढ़ीजी को रहते एक दो महीना हो गया तब बिल्ले खवास ने कहा कि रिड़मलजी अब अपन इडर गढ़ की नौकरी नहीं जायेंगे क्या – तब रिड़मल ने कहा कि जाने नहीं देते तब बिल्ले नाई ने कहा कि आप कैंची से आपनी अंगरखी की चादरे तोड़ देना –

⑥ खुंटी नहीं नाचो नाजबो, पड़वे नहीं पलाण
सहजे नहीं गोरी रो बालमों, कालो लागे काण.
सोडी ने कहा →.
⑦ इडर गढ़ री राणीयों, आपो कुल लया.
थोंरे घर म्हारो बालमों, वेगी मोकल दया.
[राणीयों ने कहा →.]
⑦ इडर आँम्बा आमले, इडर दाड़म दाख.
इडर गढ़ री चाकरी, रिड़मल बावन लाख.
[सोढीजी ने कहा →.]
⑧ काको उणरो कुंपदेव, भाई भारमल
घोड़ो उणरो नवलखो, रावतियों रिड़मल.
यह समाचार कहने पर इडर गढ़ की दिवारो
थी बन्द कर दी क्योंकि जो रिड़मलजी है उनको
दो महीने की छुट्टी है। तब रिड़मलजी व
बिलानाई व घोड़े ने छलांग लगाई तो
घोड़ा नवलखा अपने-आप दिवार के
ऊपर कर पार हो गया —